शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

माया वर्मा के साहित्य में सामाजिक चेतना के विवधि संदर्भ

डॉ. बृजेश कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
शा. मालव कन्या उ.मा.वि
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

सामाजिक चेतना समाज की अबाधित, अनवरत और विकासशील प्रवृत्ति है, जो मानव समाज को पशु से विभक्त करती है तथा मानव समाज को श्रेष्ठता प्रदान करती है। माया वर्मा ने सामाजिक चेतना के विविध संदर्भ जो समाज की विसंगतियों की प्रतिक्रिया स्वरूप ही उत्पन्न हुए हैं पर पर्याप्त प्रकाश डाला है, जिनमें सामाजिक कुरीतियाँ, अंधविश्वास, नारी की उपेक्षा, दहेजप्रथा, समाज में जातिभेद और वर्गभेद, छुआछूत की भावना, साम्प्रदायिकता तथा धार्मिकता का ढोंग आदि हैं। समाज में अच्छाइयों का रोपण करने में सामाजिक चेतना और युग चेतना ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। माया वर्मा ने अपने साहित्य सृजन से इसमें पर्याप्त योगदान दिया है

प्रस्तावना

"साहित्य संस्कृति का उत्कृष्ट घटक भी है और मानवीय चेतना के विकास का उदात्त माध्यम भी। मानवीय चेतना प्रकारांतर से सामाजिक चेतना में परिवर्तित हो जाती है। जब व्यक्ति वैयक्तिकता की संकीर्णता से ऊपर उठकर समूह का होकर उसी के कल्याण में रत रहता है, तब उसकी व्यक्तिगत चेतना सामूहिक चेतना का रूप धारण कर लेती है।"1 समाजोत्थान के सामाजिक चेतना के सन्दर्भ हैं :

1 सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों के प्रति जागृति

माया वर्मा ने अपने साहित्य में सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों को प्रखरता के साथ उठाया है। उन्होंने व्यक्ति और समाज दोनों का अहित कर रही कुरीतियों, अंधविश्वासों और रूढ़िगत मान्यताओं पर वर्जनात्मक उंगली उठाई है। ये कुरीतियाँ और अंधविश्वास सामाजिक चेतना के संदर्भ को नाकाम कर रहे हैं। वे इस पर लिखती हैं :

"बुरी तरह जकड़ा, कुरीतियों ने समाज को।
रोको मानवता पर गिरती हुई गाज को।।
प्रिय, मैंने कब कहा - आज ही नवयुग ला दो।
हिला सको तो, कुरीतियों का मूल हिला दो।।"2

"ग्रहण करो बस तथ्य, रूढ़ियाँ फैली उन्हें हटाओ।
तोड़ो सब सीमाएँ, जग में मानव धर्म चलाओ।।"3

माया वर्मा के सर्जन के पीछे "लोकमंगल की भावना और साधना, लोकमानस के परिष्कार की अभिलाषा तथा दम तोड़ती मानवता के प्राणार्थ संजीवनी बूंदों की चाह है।"4

दहेज प्रथा का विरोध

आज दहेज दानव बनकर समाज में घुस आया है और अपने विनाशकारी जबड़ों से समाज को चबाए जा रहा है। कन्या की शादी की बात की

शुरूआत दहेज से ही होती है। माया वर्मा ऐसी कुप्रथा के बारे में कहती हैं -

"इस दहेज दानव का, दुष्ट दुराग्रह छोड़ो।
दम समाज का घुटता है, यह कारा तोड़ो।।"5

लड़कों के क्रय-विक्रय ने मनुष्य को पशुता से भी नीचे पहुँचाया है। आज इस देश में लड़कों को बेचा जा रहा है। लड़के वालों की नीलामी हो रही है - बोली लगी हुई है। जो ज्यादा कीमत लगा देता है, वही अपनी लड़की की शादी कर पाता है। मार्या वर्मा कहती हैं :

"दो परिवारों का बंधन अब, नीलामी का बाजार बना।
पावन परिणय सम्बन्धों का, दानव दहेज आधार बना।।"6

माया वर्मा ने अपने 'दहेज का दानव' और 'इक्कीसवाँ जोड़ा' में दहेज प्रथा के निवारणार्थ हल भी प्रस्तुत किया है -

"आओ मिलकर करें बंधु ! दानव दहेज का बहिष्कार।
धन लेकर घर भरने वालों का, हो सामाजिक तिरस्कार
इस प्राणघातिनी कुप्रथा को, निश्चय ही आज मिटाना है।"7

पर्दा प्रथा का निषेध

भारतीय जीवन की प्रथाएँ आवश्यकता के अनुरूप अस्तित्व में आईं। कालांतर में उन रीति-रिवाजों, मान्यताओं-आवश्यकताओं-परिस्थितियों में बदलाव आया, किन्तु कुछ प्रथाओं में अपेक्षित बदलाव नहीं आया। आवश्यकता इस बात की है कि हम परिस्थिति के अनुरूप अपने रीति-रिवाजों और मान्यताओं में परिवर्तन करें। भारतीय समाज में विशेषत: ग्रामांचलों में व्याप्त पर्दा प्रथा परिस्थितिजन्य नहीं रह गई है। माया वर्मा पर्दा प्रथा की समाप्ति का समर्थन करती हैं :

"घूंघट में घुटते प्राणों की,
तड़पन तुमको पता नहीं है ?
कैसा है यह मानव, मानव -
की कीमत आंकता नहीं है।"8

मार्या वर्मा ने भारतीय नारी को अपनी शक्ति पहचानने के लिए उद्‌बोधित किया है :

"मत रहो बेखबर पर्दे में, ओ जग की रानी।
पहचानो अपनी शक्ति, नारियों कल्याणी।।
पर्दे का घुन खा गया, स्वास्थ्य को तेरे।
मुख म्लान कर गए हैं, घूँघट के घेरे।।"9

माया वर्मा कहती हैं कि नारी पथ हारे की प्रेरणा है, जीवन का सौन्दर्य है, शिवम् की प्रतिमा है - अतः इसे पर्दे के कलंक से दूर रखो। पर्दे के पीछे तो बुराई और कलंक छिपता है। नारी व्यक्तित्व तो निष्कलंक है, वरदान युक्त है।

जातिवाद समाज का कोढ़

माया वर्मा मानवता की बात कहकर जातिभेद की कल्पना को ही समाप्त कर देती है। जातिवाद व्यक्ति को दूर ले जाता है, किन्तु मनुष्यता समीपता और परस्पर सौहार्द्र को जन्म देती है। वे मानव धर्म की बात कहती हैं :

"क्यों हम इस जग को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटे।
जनमानस के बीच खिंची रेखाएँ उन्हें मिटाओ।
तोड़ो सब सीमाएँ जग में मानव धर्म चलाओ।।
ईश्वर ने सारे मानव केवल इंसान बनाए।
अपने-अपने धर्म बनाकर सब हो गए पराए।।"10

साम्प्रदायिक सद्भाव देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है और उसमें जातिभेद अपने आप विगलित हो जायेगा। धर्म के नाम पर इंसान ने ईश्वर को भी बाँट लिया है फिर जातीयता उसके सामने तुच्छ है। 'जियो और जीने दो' का संदेश माया वर्मा की कविताओं में सर्वत्र है। "जियो और जीने दो' में जातीयता कोढ़ की समाप्ति, अहिंसा

में सद्भाव का समावेश तथा उनकी समाजवादी दृष्टि में मानव मात्र की कल्याण कामना है।

अस्पृश्यता का विरोध

माया वर्मा गाँधी दर्शन और उनके अस्पृश्यता बोध से प्रभावित थीं। पीड़ित मानवता की सेवा और उपेक्षित व्यक्तियों को सहयोग उनके व्यक्तित्व की पहचान थी। इसके लिए उन्होंने मानवता का मार्ग चुना। जग को परिवार बना लेने में ही अस्पृश्यता निवारण सम्भव है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' की विशाल जीवन दृष्टि ही मनुष्य भावना को साकार कर सकती है। मानव मात्र के प्रति प्रेम और सहयोग सर्वहारा और पद दलित मानव को उठाकर गले लगाना मनुष्यता का चरमोत्कर्ष है। दरिद्र व्यक्तियों को दरिद्र भगवान का स्तर देना होगा, और उनके हित में लग जाना होगा। वे कहती हैं

"जग को परिवार बना लो।
फूलों से राह सजालो।
मन की ममता विकसा लो।
उठ, सबको गले लगाओ।
क्या अपना और पराया।
संदेश नया युग लाया।।11

छुआछूत की दुर्भावना से ग्रस्त भारतीय सवर्ण वर्ग जब तक सभी को विशेषकर तिरस्कृत दलितों को गले नहीं लगायेगा, तब तक मनुष्यता की सार्थक प्रतिष्ठा नहीं हो पायेगी। नए युग का यही संदेश है और इसी की चिंगारी माया वर्मा ने प्रज्ज्वलित की है।

नारी उपेक्षा की प्रतिक्रिया

प्रगतिशील कहे जाने वाले युग में नारी पिछड़ी है, कुंठाग्रस्त है, संत्रस्त है, शोषण का शिकार है, उपेक्षित है। क्षमा, दया, त्याग, करूणा, संवेदनशील और सहयोगी होने के बावजूद भी उसकी दुर्दशा है। सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों ने सर्वाधिक उसे ही कष्ट दिया है। आज उनकी दुर्दशा पर माया वर्मा कहती हैं -

"राम फिर से ले लो अवतार, दुखी है भारत की नारी।
हुआ अपमानित उसका प्यार, हृदय की श्रद्धा रोती।
त्याग के साथ असम्मानित, अहेतुक सेवा होती है।।"12

जन्म से तिरस्कार, उपेक्षा, अपमान, पति के लिए प्रेरित श्रृंगार और उसकी इच्छा पूर्ति नारी की भावनाओं की उपेक्षा और अनादर तथा पुरुष की मनमानी - ऐसे न जाने कितने संदर्भ हैं, जहाँ नारी प्रताड़ित है, उपेक्षित है। वे एक बार आधुनिक स्वावलम्बी नारी को आगे आने के लिए आह्वान करती हैं-

"छोड़ो भ्रम कुंठाएँ, कुंठित कोई ना रहे।
मेंट दो विवशता को, आश्रित कोई ना रहे।"13

सामाजिक चेतना के अन्य सन्दर्भ

सामाजिक चेतना के संदर्भ का फलक विराट है। माया वर्मा ने इसका चित्रांकन अपनी व्यापक सोच के साथ प्रस्तुत किया है। चूँकि उनके चिंतन के मूल में 'गायत्री परिवार' और 'युग निर्माण योजना' है जो सामाजिक चेतना से ही मूलतः जुड़े हुए हैं। माया वर्मागायत्री परिवार को एक दिन विश्व परिवार के रूप में देखने का विश्वास रखती हैं। यहाँ उनकी दृष्टि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से व्यंजित है। यह दृष्टि सामाजिक चेतना का विष्व चेतना में समाहार है - अवसान है।

उन्होंने 'गायत्री परिवार' के बारे में इस प्रकार के सामाजिक चेतना के भाव व्यक्त किए है :

"यह है गायत्री परिवार।
नहीं देख सकते हम, कोई पीड़ा झेले सहे अभाव।

सब समाज का है, अपना कुछ नहीं, धारणा ऐसी है।

बस कर्तव्य याद रखते हैं, भूला रहता है, अधिकार।।14

माया वर्मा संघर्षोन्मुखता, धैर्य, साहस, त्याग, करूणा, परहित, आत्मबल, संवेदनशीलता, विवेक, संस्कृति के उच्चादर्श, शालीनता, उदारता, एकता, ममता, शुचिता आदि सहज मानवीय गुणों को सामाजिक चेतना के संदर्भ में ही देखती हैं।

निष्कर्ष

समग्रतः कहा जा सकता है कि माया वर्मा का काव्य सामाजिक चेतना से ही जुड़ा है। यत्र-तत्र जीवन के इतर सम्बन्धों की भी चर्चा है, वह भी सामाजिक चेतना की प्रासंगिकता में है। उनकी धार्मिक चेतना भी सामाजिक चेतना की पृष्ठभूमि में ही हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. मदनगोपाल गुप्त, मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति, पृष्ठ 19

2. माया वर्मा, प्रभात किरण, पृष्ठ 7

3. माया वर्मा, 'नए संदर्भ तोड़ो सब सीमाएँ, पृष्ठ 34

4. मार्या वर्मा, नए संदर्भ, व्यवस्थापक, भावना प्रकाशन, शुभकामना, 7 जनवरी 1984

5. माया वर्मा, दहेज का दानव, पृष्ठ 4

6. माया वर्मा, इक्कीसवाँ जोड़ा, पृष्ठ 15, संस्करण 1997, प्रकाशन युग निर्माण योजना, मथुरा

7. माया वर्मा, दहेज एक दानव, पृष्ठ 53

8. माया वर्मा, प्रभात किरण, पृष्ठ 26 संस्करण 1971, प्रकाशन युग निर्माण योजना, मथुरा

9. माया वर्मा,, प्रभातकिरण, पृष्ठ 100

10. माया वर्मा, नए संदर्भ तोड़ो सब सीमाएँ, पृष्ठ 34

11. माया वर्मा, नए संदर्भ, नए युग का संदेश, पृष्ठ 55

12. माया वर्मा, जागृति गीत, पृष्ठ 1

13. डॉ. जमुना प्रसाद बड़ेरिया, माया वर्मा के काव्य में युगचेतना, पृष्ठ 35

14. डॉ. जमुना प्रसाद बड़ेरिया, माया वर्मा के काव्य में युगचेतना, पृष्ठ 7